'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

# पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 17 | 19 नवम्बर, 2017 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

## 'राजपूत एक जाति तो क्षत्रिय है एक वृत्ति'

राजपूत एक जाति है लेकिन क्षत्रिय एक वृति है। क्षत्रिय कोई जन्म से नहीं होता बल्कि क्षत्रियत्व अर्जित किया जाता है। जो सत और तम के संघर्ष में सतोन्मुखी होता है वही क्षत्रिय कहलाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे ही सतोन्मुखी लोगों का संगठन है। भीलवाड़ा में 11 नवंबर को सर्व समाजों के प्रतिनिधियों की एक बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ ने राजपूतों को अपना कार्यक्षेत्र इसलिए बनाया क्योंकि ये जाति वर्षों से क्षत्रियत्व पर आरूढ़ रही है, उसने संसार को क्षय से बचाने का काम किया है और ऐसे में इस जाति को पुनः क्षत्रियत्व पर आरूढ़ करने में सरलता से प्रयास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मूंछो पर ताव दे लेने से कोई क्षत्रिय नहीं बन जाता है बल्कि उसके लिए शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक हर दृष्टिकोण से बलवान बनना पड़ता है, बलवान व्यक्ति ही रक्षा का दायित्व निभा सकता है ऐसे में संघ उसके संपर्क में आने वाले लोगों को सतोन्मुखी करके बलवान बनाता है और फिर ऐसे सतोन्मुखी बलवान लोगों को संगठित कर रहा है। सर्व समाज की बैठक के पश्चात महाराणा कुंभा ट्रस्ट परिसरा में ही शाम 4.15 बजे राजपूत समाज के लोगों ने माननीय संघ प्रमुख श्री से भेंट की। उन्होंने स्वजातीय बंधुओं से कहा कि जहां भी विष है उसका विनाश करने का दायित्व क्षत्रिय का है। इस कार्यक्रम के दोरान हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा, मेघसिंह बरड़ोद, चतरसिंह मोहरास, गजेन्द्रसिंह दौलतगढ़, रणजीतसिंह झालरा, कानसिंह खारड़ा, नगेन्द्रसिंह जामोली आदि अनेक लोग उपस्थित रहे।

12 नवंबर को चित्तोड़गढ़ में आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि हमारा इतिहास उज्ज्वल बना क्योंकि हम सभी सिर देने से डरते नहीं थे लेकिन आज हम समाज व देश के लिए थोड़ा समय देने में भी कंजूसी करते हैं और परिणाम हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र में आई रूग्णता के कारण हम हैं क्योंकि इसे दूर करने का दायित्व हमारा था और हम स्वयं आज संरक्षण मांग रहे हैं। इसलिए शक्ति के उपार्जन के बिना क्षत्रियत्व संभव नहीं है। इस अवसर पर विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या, प्रधान प्रवीणसिंह राठौड़, पूर्व प्रधान गोविन्दसिंह शक्तावत, शक्तिसिंह मुरलिया, लक्ष्मणसिंह खोर, नरपतसिंह भाटी, हर्षवर्धनसिंह आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

## हाईकोर्ट ने रोका ओबीसी आरक्षण बिल

अभी हाल ही में राजस्थान विधानसभा में सरकार द्वारा पारित करवाये गए ओबीसी आरक्षण बिल 2017 को हाईकोर्ट ने क्रियान्वयन से रोक दिया है। गंगासहाय शर्मा की याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायाधीश के. एस. झवेरी की खंडपीठ ने इस प्रकार की रोक के आदेश जारी किए। उल्लेखनीय है कि विगत दिनों राजस्थान सरकार ने गुर्जरों सहित कुछ जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग में विशेष आरक्षण देने हेतु ओबीसी के अंदर ही 5 प्रतिशत का विशेष कोटा बनाया था एवं ओबीसी के कोटे को 21 से बढ़ाकर 26 कर दिया था। ऐसा करने से आरक्षण 54 प्रतिशत हो गया जो सुप्रीम कोर्ट की गाईड लाईन के विपरीत है। हाईकोर्ट ने इसी आधार पर इस पर रोक लगाते हुए मौखिक टिप्पणी की कि राजनेता इस प्रकार के कदमों से देश को बांट रहे हैं। इससे पूर्व भी गुर्जरों एवं अन्य जातियों का इस प्रकार के आरक्षण देने से दो प्रयासों को न्यायालय नकार चुका है। इस पूरे प्रकरण से स्पष्ट है कि आरक्षण की समस्या का हल संवैधानिक प्रक्रिया द्वारा ही संभव है। संविधान के बाहर जाकर किया जाने वाला कोई भी प्रयास न्यायालय में जाकर अटक जाएगा। इस निर्णय के इस संदेश को भी समझना चाहिए कि दबाव की राजनीति के बल को संतुष्ट करने के लिए राजनेताओं द्वारा इस प्रकार के पैंतरे फेंके जाते हैं, हमें अपनी ऊर्जा को केवल ऐसे ही किसी पैंतरे की आधार भूमि तैयार करने में लगाने की अपेक्षा सकारात्मक क्षेत्र में लगानी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## पद्मावती फिल्म का चौतरफा विरोध

संजय लीला भंसाली द्वारा बनाई गई बॉलीवुड फिल्म पदमावती में महाराणी पद्मनी से संबद्ध ऐतिहासिक तथ्यों के साथ छेड़छाड़ के आरोपों के बीच इस फिल्म का चौतरफा विरोध प्रारंभ हो गया है। राजपूत समाज के साथ साथ विभिनन हिंदुवादी संगठन, पूर्व राजा महाराजा, राजनेता, विभिन्न जातियों के संगठन भी इस फिल्म को प्रतिबंधित किए जाने की मांग कर रहे है।

इस प्रकरण में जगह-जगह धरने, प्रदर्शन, रैलियां आदि किए जा रहे हैं एवं नित्य वक्तव्य दिए जा रहे हैं। कुछ राजनेताओं द्वारा कानून व्यवस्था के नाम पर समाज के खिलाफ भी वक्तव्य दिए जा रहे है तो मीडिया और विशिष्ट रूप से इलेक्ट्रोनिक मीडिया इस विषय में गैर जिम्मेदाराना बहस करवा कर नकारात्मक टिप्पणी भी कर रहा है। हालांकि अभी फिल्म रिलीज नहीं हुई हैं लेकिन कल्पना के सहारे इतिहास को कला का आधार बनाकर इतिहास के साथ खिलवाड़ करने की अफवाहों के बीच सर्वत्र विरोध किया जा रहा है। मेवाड़ प्रवास के दौरान 12 नवंबर को भीलवाड़ा में प्रेस वालों द्वारा पूछने पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इस फिल्म का सर्वसमाज विरोध कर रहा है और आमजन का विरोध है तो सरकार को उसे सुनना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# रीट व कांस्टेबल परीक्षा हेतु मार्गदर्शन कार्यशाला

बाड़मेर में रानी रूपादे संस्थान में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वाधान में रविवार 5 नवम्बर 2017 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजपूत समाज के युवक एवं युवतियों को आगामी सरकारी भर्तियों में सफलता के बारे में विस्तार से बताया गया और तय किया गया कि आगामी रीट और राजस्थान कांस्टेबल परीक्षा में बेरोजगार युवाओं के लिए टेस्ट सीरीज का आयोजन किया जाए। उक्त टेस्ट सीरीज का आयोजन यहां पर कार्यरत सरकारी कर्मचारियों द्वारा निशुल्क रुप से किया जाएगा जिसमें राजपूत समाज के प्रतिभागी भाग लेंगे। यह टेस्ट सीरीज हर रविवार को आयोजित की जाएगी। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के लगभग 20 कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा सफलता के गुर बताए गए और बाड़मेर जैसलमेर के लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया। गणपत सिंह हूरोंकातला ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी और प्रेम सिंह लुणु ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में पुलिस कान्स्टेबल संबंधित जानकारी नव चयनित आरपीएस गिरधर सिंह मुंगेरिया के द्वारा प्रदान की गई। वही गोपाल सिंह सुवाला सहकारिता निरीक्षक ने वर्दी ओर बेल्ट के महत्व को समझाते हुए बताया कि आपका कॉन्स्टेबल से लेकर आईपीएस तक सफर होना चाहिए। केवल इस पद तक सीमित नहीं रहना है। आप रोजगार प्राप्ति के बाद अपने अगले पायदान पर चढ़ने के प्रयास करें। आसू सिंह खारा एबीईईओ ने कठिन परिस्थितियों में पढ़ाई को जारी रखकर अपनी सफलता प्राप्त करने पर अडिग रहने की बात कही। रीट संबंधित जानकारी प्रदान करने का कार्य में अध्यापक वर्ग से अवतार सिंह बाड़मेर आगोर, तन सिंह घोनिया, जोगराज सिंह उण्डखा का सहयोग रहा। कान सिंह खारा ने विज्ञान विषय, वीर सिंह तिबनियर ने इतिहास, प्रेम सिंह लाबराऊ ने राजस्थान सामान्य ज्ञान के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए इन विषयों से संबंधित प्रश्नो की जानकारी दी। सुरेंद्र प्रताप सिंह जिंझनियाली ने गणित विषय की जानकारी के साथ ही सफलता के सूत्र बताये। कठिन परिस्थितियों को झेलकर ग्रामसेवक बने गिरधर सिंह उण्डखा के ओजस्वी वक्तव्य ने युवाओं को जोश को दुगुना कर दिया।

विक्रमादित्य सिंह चाडी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में मार्गदर्शक मंडल के रूप में व्याख्याता वर्ग से पदम सिंह पाबूसरी, रतन सिंह लुणु, दीप सिंह चाडी, गणपत सिंह तामलोर, वरिष्ठ अध्यापक महिपाल सिंह चूली, खेत सिंह लीलसर, हरि सिंह भदरू, कनिष्ठ लेखाकार गजेन्द्र सिंह जिंझनियाली, पटवारी नरपत सिंह गिराब, अध्यापक सवाई सिंह बावडी, विक्रम सिंह माणकलाव, मानवेन्द्र सिंह चूली सहित कई सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम को अंत में कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव ने संबोधित करते हुए अनुशासन में रहने की सीख प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ अध्यापक युवराज सिंह जान सिंह की बेरी ने किया।

### रानीवाड़ा में छात्रावास का उद्घाटन

जालोर जिले के रानीवाड़ा उपखण्ड मुख्यालय पर 28 अक्टूबर को नवनिर्मित छात्रावास भवन का उद्घाटन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया। पूर्व महाराज सिरोही रघुवीरसिंह सिरोही, तारातरा महंत प्रताप पुरी, लाछीवाड़ा महंत रामभारती आदि के आतिथ्य में छात्रावास भवन के उद्घाटन के बाद प्रतिभाओं एवं सरकारी सेवा में नव चयनित समाज बंधुओं का सम्मान किया गया। महंत प्रताप पुरी ने कहा कि सुसंस्कारी नागरिक समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकता है इसलिए अपनी संतान को सुसंस्कारी बनायें। पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह ने ऐतिहासिक घटनाओं का उदाहरण देते हुए बताया कि उज्जवल इतिहास के आधार पर सुंदर वर्तमान व भविष्य बनाना है। समारोह को छैलसिंह रतनपुर, भूपेन्द्रसिंह जाखड़ी, अनोपसिंह करड़ा, रामसिंह चारणीम, लालसिंह धानपुर, शैतानसिंह भूतेल, खारा सरपंच प्रियंका कंवर, राजा करणवीरसिंह भाद्राजून, रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल, पूर्व मंत्री अर्जुनसिंह देवड़ा आदि वक्ताओं ने भी संबोधित किया। बड़गांव के पूर्व रावत महेन्द्रसिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन रेवंतसिंह जाखड़ी व मोतीसिंह सेवाड़ा ने किया।

## कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित हुआ टेस्ट

रीट एवं कांस्टेबल की तैयारी कर रहे समाज बंधुओं को तैयारी में सहायता हेतु 5 नवंबर को आयोजित कार्यशाला में हुए निर्णय की अनुपालना में अभ्यर्थियों हेतु टेस्ट सीरीज आयोजित करने के क्रम में पहला टेस्ट 12 नवंबर को आयोजित किया गया। राणी रूपादे संस्थान बाड़मेर में आयोजित इस टेस्ट में पुलिस कांस्टेबल के 80, रीट प्रथम लेवल के 45 एवं रीट द्वितीय लेवल के 33 अभ्यर्थी शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि इस टेस्ट सीरिज के लिए 141 कांस्टेबल परीक्षा हेतु व 110 रीट परीक्षा हेतु रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। यह टेस्ट सीरीज परीक्षा तक प्रत्येक रविवार को आयोजित की जाएगी। इसे आयेजित करने में कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव, प्रेमसिंह लाबराऊ, प्रेमसिंह लुणु, गोपालसिंह सुवाला, युवराजसिंह जानसिंह की बेरी, दीपसिंह चाडी, अवतारसिंह बाड़मेर आगोर, दानसिंह दांता सहित समाज बंधुओं का विशेष सहयोग रहा। इस श्रृंखला के संयोजक गणपतसिंह हुरोंका तला ने बताया कि टेस्ट में शामिल हुए अभ्यर्थियों ने इसे अत्यंत उपयोगी बताया एवं कर्मचारी प्रकोष्ठ का आभार जताया।



## 'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

### डॉ. नगेन्द्रसिंह डूंगरपुर

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा. नगेन्द्रसिंह जी राजस्थान की सिसोदिया राजपूत रियासत डूंगरपुर से संबोधित थे। डूंगरपुर रियासत से अनेकों बहुमुखी प्रतिभाएं निकली हैं। आपके बड़े भाई महारावल लक्ष्मणसिंह डूंगरपुर राजस्थान विधानसभा के बरसों सदस्य रहें, वे विपक्ष के नेता, एक समय मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार, राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष रहे। वे अच्छे क्रिकेटर भी थे। महारावल साहब के सुपुत्र राजसिंह डूंगरपुर ख्यातनाम क्रिकेटर एवं बीसीसीआई के अध्यक्ष रहे। उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट की जीता जागता शब्द कोश (डिक्सनरी) कहा जाता था। महाराज समर सिंह आई.ए.एस. व भारत सरकार में सचिव तथा पर्यटन व वन्य जीव सोसाईटी के अध्यक्ष रहे। मानवेन्द्रसिंह उत्तरप्रदेश के मथुरा से सांसद रहे। वर्तमान महारावल हर्षवर्धनसिंह भाजपा से राज्य सभा सांसद हैं। शिवेन्द्रसिंह फिल्म, विज्ञापन एवं टेलीविजन में जानी मानी हस्ती है। डा. नगेन्द्रसिंह ने स्कुल मैयो कालेज से एवं स्नातक जी.सी.ए. (राजकीय महाविद्यालय अजमेर) से प्रथम स्थान पर रहते हुए उत्तीर्ण की। केम्ब्रिज के सेन्ट जोन्स कालेज से आगे की पढ़ाई की। आपने उच्च अध्ययन में बहुत सी डिग्रीयां ली। एम.ए., एल.एल.एम., एल.एल.डी., डी.एस.सी., बि.लिट., डी.सी.एल., डि.लिट., डी.फिल., डी.सी.एल और इससे भी अधिक उपाधियां। आपने भारतीय प्रशासनिक सेवा की उस समय की आई.सी.एस. (लन्दन से) परीक्षा पास की एवं भारत सरकार के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहे। आप रक्षा, सूचना प्रसारण, आन्तरिक सुरक्षा एवं गृह, परिवहन, जहाजरानी आदि मंत्रालयों के सचिव सहित अन्य पदों पर रहे।



आप भूटान सरकार के सलाहकार, अन्तर्राष्ट्रीय विधि समिति के सदस्य, एफ्रो एशियाई कानूनी समिति के अध्यक्ष भी रहे। आप डा. अम्बेडकर की अध्यक्षता में बनी संविधान समिति के सदस्य भी रहे हैं। आप नेपाल, जे.एन.यू. दिल्ली, मद्रास, बनारस, मुम्बई, उदयपुर आदि विश्व विद्यालयों के विजिटिंग प्रोफेसर रहे। आपको कानून एवं अनेक प्रशासनिक विभागों का अनुभव रहा है जिस पर आपने बहुत कुछ लिखा है। आप यूएनओ की एसेम्बली के बरसों सदस्य रहे। आप अन्तर्राष्ट्रीय बार ऐसोसिएशन के सचिव भी रहे।

**आप की महत्वपूर्ण उपब्धियां :** आप भारत गणतंत्र के राष्ट्रपति के सचिव रहे। आप भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त रहे। आप पदमभूषण से सम्मानित हो चुके हैं। आपकी उपलब्धियों में सबसे महत्वपूर्व है कि आप 1973 में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (आई.सी.जे.) हेग (नीदरलैण्ड) में 9 वर्ष के लिये न्यायाधीश नियुक्त किये गये। आप दूसरे भारतीय थे जो इस पद पर पहुंचे थे। आपसे पहले बी.एन. राव एक वर्ष तक 1952-53 में यू.एन.ओ. के आई.सी.जे में न्यायाधीश रह चुके थे तथा अब तक भारत से कुल चार लोग ही यहां तक पहुंचे हैं। आप फरवरी 1985 से फरवरी 1988 तक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग के मुख्य न्यायाधीश रहे। इस सर्वोच्च पद पर पहुंचने वाले आप पहले तथा अभी तक के अन्तिम भारतीय हैं। यह सम्मान राजपूत समाज, राजस्थान एवं भारत के लिये अत्यन्त ही गौरव का है। आप उच्च श्रेणी के प्रशासनिक अधिकारी एवं विशिष्ट न्यायविद रहे हैं। आपका व्यक्तित्व अत्यंत ही अनुपम, आदर्श एवं अनेक विशिष्टताओं से भरा था। आपने राजसी घराने में जन्म लेकर भी सदैव सादगीपूर्ण जीवन जीया। आप अत्यन्त मिलनसार एवं सरल व्यक्ति थे। आपका 11 दिसम्बर 1988 में हेग (नीदरलैण्ड) में स्वर्गवास हुआ।

# वडासण में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर

गुजरात के महेसाणा जिले के वडासण गांव में 23 से 29 अक्टूबर तक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसमें भावनगर, मोरचंद, थलसर, नारी, खडसलिया, अवाणिया, धोलेरा, काणेटी, महेसाणा, अहमदाबाद, गांधीनगर, थडुसमा, भैंसाणा, वडासण, खाटाउनांवा, सुरत, मुंबई, वल्लभीपुर आदि शाखाओं के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन गुजरात के शाखा विभाग के प्रभारी छन्नु भा पच्छेगाम ने सहयोगियों सहित किया। पूरे शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य मिला। प्रातःकालीन प्रभात संदेश के साथ दिन में भी माननीय संघ प्रमुख श्री का मार्गदर्शन मिलता रहा। पूरे गुजरात से संघ के स्वयंसेवक संघ प्रमुख श्री ने मिलने शिविर में आते रहे। वडासण के निकट के गांवों के सहयोगी भी शिविर को देखने एवं संघ प्रमुख श्री से मिलने आये। 28 अक्टूबर को सभी सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें सभी को यथार्थ गीता भेंट स्वरूप दी गई। शिविर व्यवस्थापक का दायित्व विक्रमसिंह कमाणा, दिग्विजयसिंह अंबोड, राजेन्द्रसिंह भैंसाणा, दिग्विजयसिंह वडासण आदि ने निभाया। गुजरात भर से आये जिम्मेदार स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें आगामी अर्द्धवार्षिकी की कार्ययोजना बनाई गई। शिविर समापन की पूर्व संध्या पर हुए अनुभव कार्यक्रम एवं तत्पश्चात हुए सहगायनों में स्वभाविक रूप से शिविरार्थियों का प्रकटीकरण संघ के प्रति उनकी कृतार्थता एवं शिविर में मिले मार्गदर्शन का जीवंत प्रस्तुतीकरण था।

## 'जो पाया उसे सवाया करें'

संसार में आये तब हमने जो पाया उसे सवाया करके जाएं यह इंसानियत का तकाजा है। इसके लिए अनवरत प्रेरणा चाहिए और श्री क्षत्रिय युवक संघ के सभी कार्यक्रम हमें यही प्रेरणा देते हैं। जो प्रेरणा लेते हैं वे ही सवाया कर पाते हैं। कल यह ध्वज उतार लिया जाएगा लेकिन इसे हमारे हृदय में फहराकर जायें। यदि ऐसा हुआ तो प्रेरणा सतत मिलती रहेगी। जो प्रेरणा लेते हैं वे ही विरासत का संवर्धन कर सकते हैं। विरासत की रक्षा कर सकते हैं। आत्मा पर संसार के आवरण आ जाते हैं, हम उसकी आवाज सुन नहीं पाते और वहीं हम इंसानियत से, क्षत्रियत्व से गिर जाते हैं। संघ के सहगायनों, चर्चा, खेल, प्रवचन आदि सभी कार्यक्रमों में इस आवरण को हटाने की प्रेरणा मिलती है। जागरण की प्रेरणा मिलती है। सोई हुई आत्माएँ संसार में बदलाव नहीं ला सकती और आवरण

को हटाये बिना जागरण संभव नहीं है। संघ की संपूर्ण शिक्षा जागरण एवं अनावरण की है। यहाँ अवगुणों का स्थान गुण लेते है। जागृत व्यक्ति ही संसार को जगा सकता है और हमारा यह दायित्व है कि हम जागें और जगाएं क्योंकि हम भगवान के अंश हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए दोषों को रोकने के लिए दृढ़ किला बनायें। जागृत रहेंगे तो कमजोरी आ ही नहीं सकती। यह जागरूकता पूर्वजों ने इस संसार में बिखेरी है हमें उसे चुग चुग कर संग्रह करना है। इसलिए बूरे से बूरे व्यक्ति में अच्छाई, कुरूप से कुरूप में सौंदर्य व गरीब से गरीब व्यक्ति में भी संपन्नता को खोजें। इस दृष्टिकोण से हर कण में मोती ढूंढ़े।

**(-वडासण शिविर में दिए गए एक प्रभात संदेश का संपादित अंश-)**

### कोणेटी में बालिका मा.प्र.शिविर

अहमदाबाद जिले में साणंद तहसील के काणेटी गांव में 23 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक बालिकाओं का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन जागृति कंवर हरदासकाबास व उर्मिला बा पच्छेगाम ने स्वेता बा काणेटी, कल्पना बा बावड़ी आदि ने सहयोग से किया। शिविर में गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों से बालिकाएं शामिल हुई। शिविर की व्यवस्था का दायित्व दीवानसिंह काणेटी के नेतृत्व में काणेटी मंडल ने संभाला। 23 अक्टूबर को माननीय संघ प्रमुख श्री शिविर में पहुंचे एवं शाम 5.30 से 6.30 तक सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा का पूरे शिविर में सानिध्य मिला।

### नारोली में बालिका प्रा.प्र. शिविर

गुजरात के बनासकांठा प्रांत के थराद तालुका के नारोली गांव में 28 से 30 अक्टूबर तक बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में गुजरात की महिला विभाग की प्रभारी जागृति कंवर हरदासकाबास के संचालन में 150 से अधिक बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। बनासकांठा, मध्य गुजरात के साथ साथ जालोर प्रांत के सीमावर्ती गांवों की बालिकाएं भी प्रशिक्षण लेने पहुंची। नारोली के निकट स्थित पीलुड़ा गांव के समाज बंधुओं का सहयोग सराहनीय रहा। उल्लेखनीय है कि नारोली में इससे पहले भी दो उच्च प्रशिक्षण शिविर सहित अनेक शिविर हो चुके हैं। आगामी सत्र में यहीं बालिकाओं के माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का भी प्रस्ताव स्थानीय सहयोगियों द्वारा रखा गया।

### महोबा में बालिका प्रा.प्र. शिविर

उत्तरप्रदेश के महोबा में 28 से 31 अक्टूबर तक बालिका प्रा.प्र.शि. का आयोजन किया गया। शिविर में महोबा, अतरारमाफ, मकरबई आदि क्षेत्रों की बालिकाओं ने संतोष कंवर सिसरवादा एवं यशवीर कंवर बेण्यांकाबास के संचालन में क्षात्र संस्कृति, परंपराओं का प्रशिक्षण लिया। राजेन्द्रसिंह बोबासर पुरुष सहयोगी के रूप में शिविर में उपस्थित रहे। स्थानीय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष अजयसिंह, बड़े राजा अरविंदसिंह आदि भी समय-समय पर शिविर की व्यवस्थाओं की जानकारी लेने आते रहे। शिविर अनुभव में बालिकाओं ने अपने अनुभवों में नियमित रूप से संघ से जुड़े रहने का संकल्प व्यक्त किया।

### धरियावद में बालक प्रा.प्र. शिविर

2 से 5 नवंबर तक धरियावद (प्रतापगढ़) में संघ का बालकों का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा भवन शिकारवाड़ी धरियावद में भानुप्रतापसिंह धरियावद के सहयोग से संपन्न इस शिविर का संचालन चन्द्रवीरसिंह साजियाली ने किया एवं संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने अपने साथियों सहित सहयोग किया। शिविर में प्रतापगढ़, डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, पाली, राजसमंद आदि जिलों के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के अंतिम दिन आस-पास के समाज बंधु भी शामिल हुए। महासभा भवन परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

## जैसलमेर व पोकरण संभाग की बैठक

संघ के जैसलमेर एवं पोकरण संभाग की अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक 5 नवंबर को जैसमलेर संभागीय कार्यालय तनाश्रम में पोकरण संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा व जैसमलेर संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के निर्देशन में संपन्न हुई। बैठक में दोनों संभागों के विभिन्न प्रांतों में लग रही शाखाओं की समीक्षा की गई। शाखाओं के स्वयंसेवकों को शिविरों में अग्रिम प्रशिक्षण के लिए ले जाने को लेकर चर्चा की गई एवं अब तक विभिन्न प्रांतों में हुए शिविरों एवं उनमें पहुंची संख्या को लेकर समीक्षा की गई। जिन शाखाओं के स्वयंसेवक अभी तक शिविर नहीं कर पाये हैं उन्हें आगामी दिनों में होने वाले शिविरों में लेकर जाने की योजना बनाई गई। शाखाओं में उत्साह एवं रूचि की बढ़ोतरी के लिए नियमित पर्यवेक्षण एवं विभिन्न प्रकार के आयोजन करने को लेकर भी बातचीत की गई एवं योजना बनाई गई। संघ शक्ति एवं पथप्रेरक की सदस्यता को लेकर चर्चा की गई। कर्मचारी प्रकोष्ठ सहित अन्य प्रकोष्ठों की सफलता के लिए दायित्व सौंपे गए एवं जनवरी माह में कर्मचारी प्रकोष्ठ की जिला स्तरीय कार्यशाला रखने का निर्णय भी लिया गया। 22 दिसंबर को संघ स्थापना दिवस के अवसर पर म्याजलार में संभाग स्तरीय कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया। जैसलमेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में अधिकतम लोगों तक यथार्थ गीता पहुंचाने के अभियान के तहत स्वामीजी के आश्रम से प्राप्त 4000 पुस्तकों को अध्यापकों तक पहुंचाने को लेकर योजना बनाई गई ताकि स्वामी जी के संदेश को हर व्यक्ति तक पहुंचाने में सहयोग मिल सके।

## संघ प्रमुख श्री का कुचामन प्रवास

अपने नियमित प्रवास कार्यक्रम के तहत 4 व 5 नंवबर को माननीय संघ प्रमुख श्री कुचामन पहुंचे। कुचामन स्थित संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में समाज के सभी स्वयंसेवक माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे। सभी के साथ बैठकर इस सत्र में अब तक हुए संघ कार्य की समीक्षा की गई एवं आगामी दिनों की कार्ययोजना बनाई गई। पुरानी शाखाओं के बारे में चर्चा की गई एवं नई शाखाएं प्रारंभ करने के लक्ष्य लिए गए। संपर्क यात्राएं आयोजित करने की रूपरेखा बनाई गई। नागौर प्रांत प्रमुख द्वारा नागौर शहर में स्नेहमिलन आयोजित करने का प्रस्ताव रखा जिसे स्वीकृति मिली। एक दिन पारिवारिक मिलन रखा गया जिसमें कार्यालय के आस-पास रहने वाले स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के परिवार माननीय संघ प्रमुख श्री ने मिलने पहुंचे।

संपादकीय

# व्यवस्था बदलें या अपनायें?

आजादी के तुरंत बाद 28 अगस्त 1947 को पूज्य तनसिंहजी ने लिखा :-

**'मैं देख रहा जागृत जग को उत्साह भरा है उसमें।**
**मैं मुर्झाए निज फूलों की पंखुड़ियां देख रहा हूं।।'**

हम इन पंक्तियों को समझने का प्रयास करें और 70 वर्ष पूर्व कही गई इस बात के आलोक में वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास करें। जिस समय पूज्य तनसिंहजी ने ये पंक्तियां लिखी उस समय पूरे देश में उत्साह का माहौल था। देश को आजाद हुए मात्र 13 दिन हुए थे और पूरा देश आजादी का जश्न मना रहा था और नई व्यवस्था का स्वागत कर उसमें अपनी भूमिका खोज रहा था। वर्षों पुरानी व्यवस्था परिवर्तित हो रही थी और एक नया सवेरा नवीन व्यवस्था के साथ उदित हो रहा था। लेकिन हम उस स्थिति में कहाँ थे और क्या कर रहे थे? इन्हीं पंक्तियों में पूज्य श्री ने कहा है कि हम मुर्झाए हुए थे कि यह क्या हो गया? जिस व्यवस्था का आगे होकर स्वागत किया जाना चाहिए था, नवीन व्यवस्था में अपनी भूमिका ढूंढ़नी थी, उसके लिए समुचित तैयारी करनी थी, हमारी उस समय की स्थिति का लाभ उठाकर नई व्यवस्था में दमदार उपस्थिति दर्ज करवानी थी उस समय हम हतप्रभ हो मुर्झा रहे थे। कुछ गिने चुने लोगों को छोड़कर हम सभी ने मैदान छोड़कर अन्यों के लिए स्थान खाल किया और परिणाम स्वरूप नई व्यवस्था में उपेक्षित हुए। उसी उपेक्षा की प्रतिक्रिया ने हमें इस नई व्यवस्था का विरोधी बना दिया और हम व्यवस्था परिवर्तन की बात करने लगे। हमने नई व्यवस्था को, जो उस समय पूरे संसार में पंसद की जा रही थी, स्वमूल्यांकन द्वारा ही हमारी विरोधी घोषित कर दिया और उसे बदलने की बात करते रहे। तात्कालिक जागृत लोगों ने इसी व्यवस्था में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास भी किया लेकिन अधिसंख्य समाज निराशा के भंवर में फंसकर व्यवस्था विरोधी बना रहा। एक प्रकार से हमने इस व्यवस्था से स्वनिष्कासन स्वीकार कर लिया और विरोधी लोगों ने हमारी इस स्थिति का भरपूर फायदा उठाया। आज भी हम उसी मार्ग पर चल रहे हैं और देश में स्थापित व्यवस्था को अपनाने की अपेक्षा बदलने की बात में ज्यादा रूचि लेते हैं। हमारे समाज में देश की इसी व्यवस्था के बल पर आगे आये लोग भी यदा कदा व्यवस्था बदलने की ही बात करते हैं। समाज के अनेक स्वयंभू नेता व्यवस्था को गालियां देकर हमारी व्यवस्था विरोध की भावना का उपयोग करते हैं। कभी हम संविधान को दोष देते हैं, कभी शासन प्रणाली को दोष देते हैं और इसी प्रकार की नकारात्मक बातें कर संतुष्ट हो जाते हैं। ऐसे में हमारे सामने निश्चित रूप से यह प्रश्न होना चाहिए कि आजादी के बाद 70 वर्ष से हम व्यवस्था बदलने की बात करते रहे हैं, क्या हम इसमें सफल हो पाये? क्या आज की परिस्थिति में व्यवस्था को बदलना संभव है? यदि हम हठधर्मिता छोड़कर ईमानदारी पूर्वक उत्तर खोजें तो उत्तर निश्चित रूप से ना में ही आयेगा। ऐसे में फिर एक प्रश्न खड़ा होता है कि जब हम आज इस व्यवस्था को बदलने में सक्षम नहीं हैं, इससे सुंदर किसी व्यवस्था का कोई खाका हमारे पास नहीं है तो क्यों नहीं इसी व्यवस्था को सिद्धत से अपना कर उसमें अपना स्थान बनायें। वास्तव में तो क्या कोई व्यवस्था खराब या अच्छी होती है? उत्तर ना में ही आयेगा। व्यवस्था खराब नहीं होती बल्कि व्यवस्था में बैठे लोग खराब या अच्छे होते हैं। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने सत्ता बदलने को क्रांति नहीं कहा बल्कि जीवन बदलने को क्रांति कहा है। आज भी समाज में व्यवस्था के प्रति आक्रोश पनपा हुआ है। कभी आरक्षण के नाम पर, सभी इतिहास मे नाम पर तो कभी राजनीति के नाम पर इस आक्रोश और असंतोष को बढ़ाकर युवा पीढ़ी को निराशा की ओर धकेला जा रहा है। उनको बार बार यह बात कही जा रही है कि हमारा सब कुछ इस व्यवस्था ने छीना है और यही बात उनमें निराशा का बारूद पैदा कर रहा है जो असंतोष की छोटी सी चिनगारी से यत्र-तत्र भड़कता रहता है। ऐसे में आवश्यक है कि एक अभियान चलाकर युवा पीढ़ी को यह समझाया जाए कि हमारा पुरूषार्थ हमें हर व्यवस्था में अग्रगामी बना सकता है। उनको इस बात से अवगत करवाया जाना आवश्यक है कि हमारे ही जिन बंधुओं ने पुरूषार्थ का दामन थामा वे आज भी इस व्यवस्था के शीर्ष तक पहुँचे हैं। निश्चित रूप से इस व्यवस्था में हमारे विपरीत अनेक तत्व क्रियाशील हैं, अनेक विपरीत धाराएँ इस व्यवस्था में हमारे खिलाफ काम कर रही हैं लेकिन उन सभी से संघर्ष इसी व्यवस्था के सहारे किया जा सकता है। हमारे सामने अनेक ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिन्होंने इसी व्यवस्था के सहारे इसी व्यवस्था की कमियों को उजागर कर उन्हें ठीक करने को मजबूर किया है। इसलिए समस्या केवल व्यवस्था नहीं बल्कि व्यवस्था के प्रति हमारी उदासीनता है और यह उदासीनता हमें स्वाभाविक रूप से व्यवस्था के बाहर कर देती है। फिर बाहर बैठकर हम व्यवस्था को गालियां देकर संतुष्ट हो जाते हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हम इस व्यवस्था की खामियों की बात ही न करें, उन्हें उजागर ही न करें बल्कि आवश्यक यह है कि उनको उजागर करने तक ही सीमित न हों बल्कि व्यवस्था के अनुकूल साधन अपना कर उन्हें दूर करने का प्रयास करें और वे सभी प्रयास जब तक यह व्यवस्था मौजूद है तब तक इसी व्यवस्था के अंतर्गत ढूंढ़ने पड़ेंगे। इसलिए व्यवस्था को बदलने की अपेक्षा अपनाने की बात करें, वास्तविकता को स्वीकार करें, अपनी शक्ति और स्थिति को जाँचे और तद्नुकूल कदम उठायें तो अधिक बेहतर परिणाम निकल सकते हैं क्योंकि कदम उठाने के बाद उसे रखने का स्थान चाहिए होता है। जो लोग कदम उठाने से पहले उसे रखने का स्थान नहीं तय करते उन्हें वापिस कदम खींचने पड़ते हैं और ऐसा करना फिर एक नई निराशा पैदा करता है। इन सबके लिए अंतरावलोकन आवश्यक होता है। व्यक्तिगत एवं सामूहिक अंतरावलोकन कर अपनी कमियों को ठीक करने की प्रक्रिया में आना पड़ता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी प्रक्रिया का नाम है और हर व्यवस्था में अपनी विशिष्टता को बरकरार रखते हुए सक्रिय भागीदारी के लिए तैयार करता है।

## पोलूड़ा (बनासकांठा) में शिक्षक बैठक

संघ के बनासकांठा प्रांत में सेवारत शिक्षकों एवं सेवानिवृत शिक्षकों की एक बैठक 1 नवंबर को पीलूड़ा ग्राम स्थित पाठशाला में रखी गई जिसमें उपस्थित शिक्षक बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का विस्तार से परिचय दिया गया। संघ की कार्यप्रणाली की चर्चा करते हुए बताया गया कि संघ व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला है। समाज में सभी प्रकार के निर्माणों से महत्वपूर्ण निर्माण व्यक्तित्व निर्माण है और सभी शिक्षक भी किसी न किसी रूप से व्यक्तित्व निर्माण में संलग्न हैं। ऐसे में यदि शिक्षक संघ द्वारा निर्देशित कार्यप्रणाली से परिचित होकर सहयोग करें तो कार्य की गति बढ़ सकती है। संघ का मूल कार्य क्षेत्र विद्यार्थी हैं और शिक्षक सदैव विद्यार्थियों संपर्क में रहता है ऐसे में शिक्षक संघ के सर्वाधिक सहयोगी हो सकते हैं। वरिष्ठ स्वयंसेवक पदमसिंह रामसर के निर्देशन में आयोजित इस बैठक में बनासकांठा जिले की विभिन्न तहसीलों से आये शिक्षकों ने अपने अपने क्षेत्र में संघ कार्य में सहयोगी बनने की कार्ययोजना तैयार की। बैठक का संचालन अजीतसिंह कुणघेर ने किया। जालोर संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी भी अपने सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

## चैन्नई में मनाई जयंती

चैन्नई में निवासरत प्रवासी राजस्थानी बंधुओं ने 30 अक्टूबर को सम्राट मिहिरभोज एवं माट्साब आयुवानसिंहजी की जयंती के उपलक्ष में कार्यक्रम रखा इसमें जयपालसिंह राखी, श्रीपालसिंह सलोदरिया, हिंगलाजदान चारण, समुद्रसिंह देलदर, डूंगरसिंह बावतरा आदि ने विचार व्यक्त किए। सभी ने भविष्य में भी महापुरूषों की जयंतियाँ एवं पुण्यतिथि समारोह पूर्वक मनाने का निर्णय लिया।

खरी-खरी

## घंटा बजाएं, राजा उठकर आएंगे

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक नेता के भाषण में सुना कि कालीदास के अभिज्ञान शकुंतलम में ऋषि कण्व की पत्नी माता गौतमी गर्भवती शकुंतला को लेकर रात के तीन बजे राजा दुष्यंत की नगरी में आती हैं और महल के पहरेदार से पूछती है कि क्या वे इस समय राजा से मिल सकती हैं? पहरेदार उत्तर देता है कि क्यों नहीं, आप द्वार पर बंधे घंटे को बजाएं, राजा उठकर आयेंगे, आपकी बात सुनने। इस उद्धरण को सुनकर लोकतंत्र का मतलब समझ में आता है, जवाबदेह सरकार का मतलब समझ में आता है। हम कह सकते हैं कि वह तो राजतंत्र था, लोकतंत्र नहीं तो साहब नाम में क्या पड़ा है कुछ भी रख लो असली बात तो व्यवहार की है। इसीलिए पूज्य तनसिंहजी ने लिखा है

'नाम पुराने अर्थ नये दे, जीवन बदले क्रांति यही है।'

लेकिन श्रीमान यहाँ तो नाम ही बदले हैं, जीवन नहीं बदले। जिसे आप राजतंत्र कहते थे, निरंकुश शासन करते थे, जनता के प्रति गैर जवाबदेह शासन कहते थे वहां का राजा रात को तीन बजे भी अपने किसी नागरिक की पुकार सुनकर उठकर आता था और आज आपकी क्या स्थिति है? अब तो जनता के लिए जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों का शासन हैं, आप तो जवाबदेह सरकार हैं फिर क्रांति क्यों नहीं आयी? क्यों आपको जनता से अपने और अपने कारिंदों के कारनामे छिपाने के लिए अध्यादेश लाने पड़ते हैं? क्यों कोई विधायक या मंत्री आपसे मिलने के लिए तरसता रहता है, क्यों कोई मुख्यमंत्री दो दो दिन तक प्रधानमंत्री से मिलने के इन्तजार में दिल्ली में बैठा रहता है या अपने पार्टी अध्यक्ष का दीदार नहीं पाता? क्योंकि दिल नहीं बदले हैं, केवल सत्ता बदली और इसीलिए क्रांति घटित नहीं हुई। इसीलिए प्रश्न पूछना आपके यहाँ गुनाह हो गया है। इसीलिए लोकतंत्र के नाम पर परिवार तंत्र चल रहा है। इसीलिए पार्टियों में चुनाव नहीं बल्कि मनोनयन होते हैं। आप दिल भी बदलना नहीं चाहते और जनता बेचारी विकल्प के अभाव में सत्ता बदलती रहती है। आपको भी पता रहता है कि अगली बार आप आने नहीं है इसलिए जब आए हैं तब तो पूरा मजा लें क्योंकि अगली से अगली बार आपके आने की बारी के समय क्या पता आपकी जगह कोई दूसरा ले ले। इसीलिए तो आप सत्ता को व्यक्तिगत जागीरी के रूप में उपयोग करने लगते हैं। क्योंकि आप मानते हैं कि पांच वर्ष के लिए तो जनता ने आपको अबाध रूप में सत्ता का उपयोग करने का प्रमाण पत्र दिया है, और आपको जब पक्का अंदेशा हो जाता है कि आप वापिस नहीं आयेंगे तो आप भूतपूर्व होने पर भी सभी भोग सरकारी खजाने में भोगने के भी कानून बना ही देते हैं और किसी की मजाल की कोई आपके खिलाफ बोल भी जाये क्यों कि उनके लिए आप औरंगजेब बनते भी देर नहीं करते।

## शिविर सूचना

| क्र.सं. | शिविर | समय | स्थान मार्ग आदि |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 23.12.2017 से 25.12.2017 तक | **टाणा,** तह. सिहोर, जिला-भावनगर (गुजरात)। |
| 2. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 23.12.2017 से 25.12.2017 तक | **ढीमा,** जिला-बनासकांठा (गुजरात)। |
| 3. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 23.12.2017 से 25.12.2017 तक | **गांधीनगर** (गुजरात) संपर्क-महावीरसिंह 9978405810. |
| 4. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 23.12.2017 से 25.12.2017 तक | **वडासण** हाई स्कूल, कड़ा मानसा रोड़ (गुजरात)। |
| 5. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 23.12.2017 से 25.12.2017 तक | **डोभाड़ा** (गुजरात)। |
| 6. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 24.12.2017 से 26.12.2017 तक | **सूरत** (गुजरात) संपर्क : दिलीपसिंह गड़ा 9375852588. |
| 7. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 24.12.2017 से 27.12.2017 तक | **मिठड़ाऊ,** जैसलमेर से म्याजलार बस द्वारा पहुंचे। |
| 8. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 24.12.2017 से 27.12.2017 तक | **नाग खजूरी,** जिला मंदसौर (मध्यप्रदेश) संपर्क : महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ 09425978051. |
| 9. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 24.12.2017 से 27.12.2017 तक | **अयाना,** तह. जावरा, जिला रतलाम (मध्यप्रदेश)। |
| 10. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 24.12.2017 से 27.12.17 तक | राजपूत बोर्डिंग हाऊस, **रतलाम** (मध्यप्रदेश) संपर्क : कृष्णेन्द्रसिंह सेजावता 08989897788, ब्रजराजसिंह बेडू 09425356540. |
| 11. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 24.12.2017 से 27.12.17 तक | करणी कन्या छात्रावास, गांधी कॉलोनी, **बीकानेर।** |
| 12. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 25.12.2017 से 28.12.2017 तक | जयमल कोट पुष्कर, **अजमेर।** |
| 13. | मा.प्र.शि. (बालक) | 25.12.2017 से 31.12.2017 तक | **गड़ियाला (बीकानेर),** बीकानेर, बज्जू, बाप से बसें उपलब्ध है। |
| 14. | मा.प्र.शि. (बालक) | 25.12.2017 से 31.12.2017 तक | **तेना,** जोधपुर-शेरगढ़ बस मार्ग पर स्थित। |
| 15. | मा.प्र.शि. (बालक) | 25.12.2017 से 31.12.2017 तक | वीरमदेव राजपूत छात्रावास, **जालोर।** |
| 16. | प्रा.प्र.शि. (बालक) | 28.12.2017 से 31.12.17 तक | **ताल,** जिला रतलाम (मध्यप्रदेश) संपर्क : मदनसिंह 09893606416. |
| 17. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 28.12.2017 से 31.12.2017 तक | **कोटा,** संपर्क : पिंकु कंवर पत्नी भंवरसिंह 8619927352 वीरेन्द्रसिंह तलावदा 9414396530 |
| 18. | मा.प्र.शि. (बालक) | 31.12.2017 से 06.01.2018 तक | **रोजदा,** जिला-जयपुर |
| 19. | प्रा.प्र.शि. (बालिका) | 30.12.2017 से 01.01.2018 तक | **मोरचन्द** (गुजरात)। |

**पूर्व में प्रकाशित करणू प्रा.प्र.शि. स्थगित कर दिया गया है।**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

**राजेन्द्रसिंह बोबासर,** शिविर कार्यालय प्रमुख

## शेरगढ़ में स्नेहमिलन

शेरगढ़ प्रांत के स्वयंसेवकों का एक दिवसीय स्नेह मिलन 11 नवम्बर की रात्रि को सुमेरसिंह चोरड़िया के आवास पर रखा गया जिसमें आगामी दिसम्बर माह में तेना में आयोजित होने वाले मा.प्र.शि. को लेकर जिम्मेदारियां सौंपी गई। भीखसिंह सेतरावा को विगत वर्षों में शिविर कर चुके ऐसे स्वयंसेवकों की सूची बनाने का काम सौंपा गया जो हाल में नियमित नहीं है। विगत दो वर्षों में मा.प्र.शि. की योग्यता हासिल कर चुके स्वयंसेवकों की भी गांव अनुसार जिम्मेदारी दी गई। 28 दिसम्बर को शिविर में होने वाले स्नेहमिलन का दायित्व भंवरसिंह बालेसर को सौंपा गया। स्नेहमिलन में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा, संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास, प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

## तील दलों ने किया 35 गांवों में संपर्क

संघ के बनासकांठा प्रांत के स्वयंसेवकों ने 2 व 3 नवंबर को थराद, वाव, दियोदर, कांकरेज, धानेरा, दांतीवाड़ा आदि तहसीलों में तीन दल बनाकर संपर्क यात्राओं का आयोजन किया। संपर्क यात्रा में कुल 35 गांवों में संपर्क किया गया। इसके लिए तीन दल बनाये गए एवं प्रत्येक दल ने स्वयं को

आवंटित गांवों में जाकर समाज बंधुओं तक संघ का संदेश पहुंचाया। प्रथम दल में पदमसिंह रामसर, अजीतसिंह कुणघेर, सूरजसिंह वातम, सिद्धराजसिंह पीलूड़ा, द्वितीय दल में गुमानसिंह माडका, थानसिंह लोटवाड़ा, ईश्वरसिंह आरखी एवं तृतीय दल में डूंगरसिंह चारड़ा, मनदीपसिंह माडका, सुमेरसिंह रामसण, जब्बरसिंह सुईगाम, मनोहरसिंह वलादर शामिल हुए। इससे पूर्व 25 से 27 सितंबर तक गुजरात के शाखा कार्यालय प्रभारी छन्नु भा पच्छेगांव के बनासकांठा प्रवास के दौरान 11 गांवों में संपर्क यात्रा हुई। बालिका शिविर के दौरान भी पदमसिंह रामसर के नेतृत्व में 8 गांवों में संपर्क किया गया। इस प्रकार बनासकांठा की टीम ने विगत दो माह में अलग-अलग समय में 51 गांवों में संपर्क यात्राओं के माध्यम से संघ का संदेश समाज बंधुओं तक पहुंचाया।

## कच्छ में समाज जागरण संदेश यात्रा

संघ के कच्छ प्रांत के स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों ने 4 व 5 नवंबर को समाज जागरण संदेश यात्रा का आयोजन किया। दो दिवसीय यात्रा के दौरान रापर, खोखरा, खेड़ोई, किडाणा सोसायटी, भचाऊ, चिरई, आदिपुर आदि गांवों में स्नेहमिलन एवं बैठक कर संघ की कार्य प्रणाली, क्षात्रधर्म व परंपरा का परिचय दिया गया एवं सात्विक सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई। यात्रा के दौरान इससे पहले इन गांवों में आयोजित सांघिक आयोजनों की स्मृति को ताजा किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक विक्रमसिंह खेड़ोई ने 1959 में खेड़ोई गांव में आयोजित उ.प्र.शि. की यादें सुनाई। वे 54 वर्ष पश्चात अपने सम्मुख संघ के स्वयंसेवकों को पाकर अभिभूत हुए। चिराई गांव में स्व. कानसिंह जाड़ेजा द्वारा लिखित पुस्तक ''चंद्रकिरण'' में संघ के बारे में उल्लेखित बातों पर चर्चा की गई एवं वरिष्ठ समाज बंधु अनोपसिंह चिरई ने गांव से शिविर कर चुके लोगों के बारे में चर्चा की। गांधीधाम के निकट स्थित राजपूत बहुल सोसायटी किडाणा में आयोजित स्नेहमिलन में युवाओं ने उत्साहपूर्वक संघ की बात सुनी। आदिपुर शहर के युवाओं ने उनके यहाँ संघ कार्य को लेकर उत्सुकता प्रकट की एवं सहयोग का विश्वास दिलाया। किडाणा व चिरई में नियमित शाखा तथा आदिपुर व खेड़ोई में साप्ताहिक शाखा प्रारंभ करने का दायित्व हमीरसिंह मूलाना, मनोहरसिंह रतरेड़ी, गोपालसिंह भाटा व ध्रुवराजसिंह जाड़ेजा ने लिया। यात्रा के दौरान भचाऊ तहसील मुख्यालय पर आयोजित बैठक में आगामी दिनों में संघ परिचय सम्मेलन व प्रा.प्र.शि. आयोजित करने का निर्णय भी किया गया।

## नारी शाखा की नई पहल

भावनगर के निकट नारी गांव में वर्षों से शाखा लगती है। संघ के अनेक कार्यक्रम हुए है। शाखा के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुरुभा नारी के माताजी के देहांत पर 4 नवम्बर को अवाणिया, सामपुरा, भावनगर शाखा के स्वयंसेवक भी नारी पहुंचे एवं माताजी का अंतिम संस्कार शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ कर किया एवं 12 दिन तक चलने वाले मरणोपरांत कार्यक्रमों को सभी की सहमति से 9 दिन में ही पूर्ण किया। सभी ने सुरुभा के इस प्रयास एवं संघ के सहयोग को सराहा।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

**शाखा के मैदान से**

**सामूहिक शाखा बाड़मेर :**
12 नवम्बर रविवार को बाड़मेर में लगने वाली शाखाओं के स्वयंसेवकों का एकत्रीकरण कर सामूहिक शाखा लगाई गई।

# जयन्ती व प्रतिभा सम्मान

टोडरमलजी के पौत्र व भीमसिंहजी के पुत्र उदयसिंह जी धमोरा के प्रथम जागीरदार थे। उनकी 343वीं जयंती 20 नवम्बर को उदयगढ़ पर युवा शक्ति द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाई गई। गांव के से.नि. आर्मी युवा श्री रतनसिंह ने सन् 2016 में युवा शक्ति का गठन किया। जिसमें करीब 50-60 युवा जुड़े हुये हैं। समाज के कई बालक जिन्होंने पढ़ाई छोड़ दी है या जो अध्ययन कर रहे हैं उनको कोई मार्गदर्शन कराने वाला नहीं था। बालक आवारा होते जा रहे थे, कई तो नशे के लिये चुपके-चुपके अंधेरे में ठेके पर भी जाने लगे थे, उनको युवा शक्ति ने सही मार्गदर्शन कराया। एक खेत में ग्राउण्ड तैयार किया जिसमें सुबह शाम दौड़ लगाना, वालीबॉल या अन्य खेल शुरू किया, सेना व पुलिस भर्ती के संबंध में इनको ज्ञान कराया। हर रविवार को सबने एक मिटिंग करनी भी शुरू की जिसमें सब अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं, इनके सबके लिये एक सी पोशाक पेन्ट, टी-शर्ट व केसरिया साफा तय किया गया। जो युवा आर्थिक रूप से कमजोर हैं उनकी पोशाक का प्रबंध किया गया। विवाह, किसी धार्मिक व सामाजिक उत्सव में सब एकसी ड्रेस पहन कर शरीक होते हैं और सेवा भी देते हैं। 10वीं, 12वीं बोर्ड परीक्षा वाले विद्यार्थियों के लिये परीक्षा के दिनों में ट्यूशन की व्यवस्था भी कर रखी है ताकि अच्छे अंक प्राप्त कर सकें, यह युवा शक्ति का बहुत ही सुन्दर प्रयास है।

अभी युवा शक्ति के छात्र भरतसिंह के प्रयास से ही यह उत्सव मनाया गया। श्री उदयसिंह जी जो खंडेला के राजा जी केसरीसिंह के पक्ष में मुसलमानों से लड़ते हुए वि.सं. 1754 में हरीपुरा युद्ध में शहीद हुए थे। साथ ही इनके बड़े पुत्र संग्रामसिंह जी जिन्होंने एक जाट की बालिका की इज्जत बचाने के लिए अपना जीवन न्यौछावर किया था। कुएं से पानी भरते समय इस बालिका को पपरना का नवाब जो इधर से अपने दल बल के साथ निकल रहा था, जबरन पकड़ कर ले गया। संग्राम सिंह जी ने एक साथी के साथ उसका पीछा किया और हरड़िया के कांकड़ में उसका मुकाबला किया बालिका को तो इन्होंने बचा लिया परन्तु दोनों ने वहीं बलिदान दे दिया। बाद में इनके छोटे भाई जयपालसिंहजी ने पैंतालसिा के सरदारों के सहयोग से नबाब को खत्म करके उसकी नबाबी भी छीन ली। इसके अलावा मुरजादसिंह जी पुत्र जोरावरसिंह जी धमोरा के ही एक परिवार के हैं और सन् 1941 में राज राईफल में भर्ती होकर ब्रिटिश सेना के पक्ष में जर्मनी के सैनिकों से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे उनकी भी जयन्ती मनाई गई। तीनों शहीदों की जयन्ती एक साथ ही मनाई गई। जयन्ती पर काफी लोग एकत्रित हुए, युवा वर्ग की संख्या अधिक थी, गांव के अलावा आस-पास के गांवों से भी सरदार पधारे।

प्रतिभा सम्मान में समाज के 10वीं व 12वीं के विद्यार्थी जिन्होंने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये हैं उनको सम्मानित किया गया। इनको सन् 2000 से उदय समिति से 500 रू. प्रोत्साहन राशि के रूप में नकद दिये जाते हैं। अभी समाज की बालिका नीतु कंवर जो अकाउण्टेंट पद पर चयनित हुई है और अवधेशसिंह जो सीआईएसएफ में सब इंसपेक्टर पद पर चयनित हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया गया। गांव में सबसे वरिष्ठ (सीनियर सिटीजन) श्री सवाईसिंह को भी साफा पहना कर सम्मानित किया गया।

युवा शक्ति का यह अच्छा प्रयास है, भविष्य में इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। पूरे गांव में दिन भर युवा शक्ति के कार्यों की ही चर्चा रही।

**सवाईसिंह धमोरा,**
से.नि. थानेदार

## उबरी में शाखा शुरू

बनासकांठा प्रांत में हाल ही में हुई सम्पर्क यात्राओं के परिणाम स्वरूप अनेक जगह शाखाएं शुरू हुई हैं। 11 नवम्बर को बनासकांठा के ही उबरी गांव में स्थानीय युवकों ने शाखा शुरू की।

# मिनखपणौ

**मदनसिंह सोलंकिया तला**

कुंण जांणै ?
कितरा जुगां सूं
अंतस री ऊण्डाई
अर
अपणायत रै उणियारै सूं
ओळखीजतौ हो आदमी !
जकौ-
ढांणी-ढांणी जावण री
पगडांडी राखतौ
वो आदमी !
जकौ-
पखालां रै पांणी नै
हेत सूं
पीवतौ अर पावतौ
वो आदमी !
जकौ-
ऊजळ दीठ रै पांण
रेत में मंडियौड़ा
पगां रा निसांण'र
पंखेरूवां री बोली नै
पागी अर सुगनी बण
पिछांण लेतौ वो आदमी !
जकौ-
परनाळां में
बै़वतै पांणी री
प्रीत अर रीत नै पोखतौ
वो आदमी !
हां ! वो ईज आदमी
आज री
जीयाजूंण री
घांणी में पीसीजतौ
निसासां न्हांखतौ
व़गत रै व़ायरै सूं
भम्योड़ौ
बंतळ बायरौ
व्हैगो अध-बावळौ
म्हारा व़ीर !
जिणरी आंख्यां रौ
सूखगौ है पांणी
वो आपरै
अंतस री ओछाई अर
ऐकलापणै री अमूंझणी नै
मिटावण सारू
मोबाइल रै माथै
दिन-रात
आंगळियां फेरतो
बळबळता आखरां नै
बांचतौ
आपरी ओळख
अर
मिनखपणै री मरजाद नै
बीसरग्यौ आदमी !
बरस बीतगा
मिनख री जात में
खोजतां मिनखपणौ
पण
अचाणचक !
ऐक दिन
सिंझ्यां रा घर जावतां
पगडांडी पर बैवती
कांपती
कुरळावती
हांफती
ऐक डोकरी रै हाथ में
म्है देखी
अकूत मिनखपणै सूं
भरियोड़ी
ऐक डांगड़ी !
वा सुणावती
आपरै अनुभव री बातां
कै-
बूढापै में बिलखता
फुटपाथां पर सोवता
मांझळरातां रोवता
म्है देखिया घणा मिनख !
लगोलग
वा कैवती रयी
अर म्है सुणतौ रयौ
व़गत री बातां
कै-
ऊजड़ मारगां में
तपतै तावड़ियै
जद बळती पगथळियां में
व्है जाता हा छाळा
उण व़गत म्हैं काढिया
आखड़तै अर
बीगड़तै बूढापै में
काळजै रा कांटा
देखतां देखतां
अदीठ व्हैगी दीठ !
अर म्हैं
सोचतौ थको
मन ही मन में
खोयग्यौ
उण डोकरी री डांगड़ी में
जठै-
म्हैं मिनखपणै नै देखियौ
हां ! म्हैं
मिनखपणै नै देखियौ !!!

## संघ प्रमुख श्री पहुंचे सांत्वना देने

पूज्य तनसिंहजी के निकट संपर्क में रहे कैलाशपालसिंह ईनायती को उनके पुत्र के देहावसन पर संघ प्रमुख श्री 31 अक्टूबर को सड़क मार्ग से विजयनगर पहुंचे। वरिष्ठ सांत्वना देने स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी एवं संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास भी उनके साथ रहे।

# बिहार का प्रतिभाशाली परिवार

-कर्नल हिम्मतसिंह पीह

प्रतिभा का अर्थ है विलक्षण बौद्धिक शक्ति। बुद्धि में नई-नई कोंपलें फूटते रहना, नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति आदि प्रतिभा के लक्षण हैं। शास्त्रकारों ने प्रतिभा की परिभाषा कुछ इस प्रकार ही है- 'प्रज्ञा नवनवोन्मेशालिनी प्रतिभा मता' अर्थात जिस प्रज्ञा द्वारा नई नई कल्पना होती है, उसे प्रतिभा कहते हैं। प्रतिभा के तीन भेद किये गए हैं, 'सहजा' 'आहार्या' और 'औपदेशिकी'। सहजा उसे कहते हैं जो पूर्व जन्म के संस्कारों से प्राप्त हो। अहार्या का अभिप्राय अर्जित करने से है, ग्रहण करने से है। सार्वभौमिक साध्य के लिए प्रतिभा के साथ काम करने पर प्रतिभाशाली व्यक्ति एक नई शक्ति से ऊपर उठने लगता है। किसी विरले परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी वीर पैदा होते हों तो इस प्रेरणास्पद परिवार का परिचय कराना सद्कार्य ही माना जाये क्योंकि यह कार्य जग हितार्थ है। इसी हेतु सर्वप्रथम बिहार विभूति के अलंकार से सुशोभित स्व. श्री अनुग्रह नारायणसिंहजी के परिवार का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री अनुग्रह नारायणसिंहजी सुपुत्र ठाकुर विश्वेसरदयालसिंह जी ग्राम पोइना जिला औरंगाबाद बिहार के मूल निवासी थे। विद्यार्थी जीवन से ही परतंत्रता के वेदना से वे व्यथित और व्याकुल होने लग गये थे। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और योगीराज अरविन्द जैसे महापुरूषों से प्रभावित हो देश सेवा के लिए समर्पित हो गए। बिहार विभूति अनुग्रह बाबू ने महात्मा गांधी और डा. राजेन्द्रप्रसाद के साथ स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई। आपकी पहचान वर्तमान बिहार के निर्माता के रूप में है। आपके सुपुत्र श्री सत्येन्द्र नारायणसिंह एक जाने माने स्वतंत्रता सेनानी थे। उनको लोग प्यार से छोटे साहब कहते थे। 1989 में आपने बिहार के मुख्यमंत्री पद का कार्यभार संभाला। वे देश में अपनी सैद्धांतिक राजनीति के लिए विख्यात थे। आपने युवाओं को राजनीति में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्सहित किया। आप सात बार सांसद चुने गये। आपकी पत्नी श्रीमती किशोरीसिंह भी एक कद्दावर राजनेता और कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त थीं। वे भी वैशाली संससदीय क्षेत्र से दो बार सांसद चुनी गईं। सातवीं लोकसभा के लिए तो पति-पत्नी दोनों ही एक साथ सांसद चुने गये। इन्हीं के सुपुत्र श्री निखिल कुमार सिंह, जिन्होंने अपनी जीवन यात्रा भारतीय पुलिस अधिकारी के पद से प्रारम्भ कर, दिल्ली पुलिस के कमिश्नर, केन्द्र में गृह सचिव और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सलाहकार रहने के उपरान्त नागालैण्ड और केरल के राज्यपाल रहने का गौरव प्राप्त किया। आप दो बार सांसद भी रह चुके हैं। आपकी पत्नी श्रीमती श्यामा कुमारी स्वयं एक प्रतिभाशली महिला हैं और एक अन्य प्रतिभाशाली परिवार की बेटी हैं। वे औरंगाबाद बिहार से सांसद रह चुकी हैं। श्रीमती श्यामा कुमारी के पिता स्व. सर त्रिभुवन प्रतापसिंह इण्डियन सिविल सर्विसेज के अधिकारी और स्वतंत्र भारत के प्रथम वित्त सचिव थे। आप शेखपुर जिला पूर्णिया बिहार के मूल निवासी थे। आपका परिवार सुशिक्षित, साधन सम्पन्न और बिहार राज्य का बहुत ही प्रभावशाली जागीरदार परिवार रहा है। देश में आपके परिवार की पहचान एक राजनैतिक प्रभुत्व और अधिकारी वर्ग के परिवार की रही है। सर टी.पी.सिंह की पत्नी श्रीमती माधुरीसिंह स्वयं सांसद थीं। पूर्णिया क्षेत्र प्रतिनिधित्व करती थीं। सर टी.पी.सिंह और श्रीमती माधुरीसिंह के दो पुत्र और तीन पुत्रियां थीं, जिनका ब्यौरा इस प्रकार है, श्री नन्द कुमारसिंह-आप भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी, अर्थशास्त्री और राजनेता रह चुके हैं। प्रशासनिक सेवा अधिकारी के नाते आप योजना आयोग के सदस्य, रेवेन्यू सेक्रेट्री और प्रधानमंत्री (श्री वाजपेयी) के सचिव रहे। आप एक ख्याति प्राप्त अर्थशास्त्री होने के साथ ही अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों के भी जानकार हैं। इस क्षेत्र में आपके द्वारा प्रदत योगदान के सम्मान में जापान सरकार ने अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'आर्डर आफ दी राइजिंग सन' प्रदान कर सम्मानित किया है। सन् 2008 में आप बिहार जनता दल (यू) के प्रतिनिधि के रूप में राज्यसभा के लिए चुने गये। 2014 के आम चुनाव से पहले आपने भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली। श्री उदयसिंह पूर्णिया से सांसद रह चुके हैं। श्रीमती श्यामासिह औरंगाबाद से लोकसभा सदस्य रह चुकी हैं। श्रीमती राधासिंह और पुत्री कृष्णासिंह बतौर भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी केन्द्र के सचिव के पद पर रह चुकी हैं।

# सहजता है संघ मार्ग पर चलने का सूत्र

सहजता सृष्टि के संचालन और समस्त कार्यप्रणालियों का आधार है। सहज आचरण जीवन को सार्थक बनाता है। सहज भाव निश्चलता, सत्य और सदाशयता (उदारता) के साहचर्य से सिंचित और पुष्ट होता है। सूर्य हमें प्रकाश देता है, चंद्रमा शीतलता प्रदान करता है, पेड़ हमें छाया, फल-फूल देते हैं यह सब उनकी सहजता की प्रवृति के कारण ही होता है। भगवान राम-कृष्ण, महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास इत्यादि महापुरुषों ने इसी सहजता के गुण से क्षात्र धर्म को बखूबी निभाया। व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुकुल कार्य करे तो उसमें सहजता आती है। सहजता से सुख.दुख, मान-अपमान, निंदा-प्रशंसा आदि भावनाओं से ऊपर उठ जाते हैं जिससे सारे भटकाव समाप्त हो जाते हैं।

क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के नाते क्षात्र धर्म का पालन करना हमारे लिए सहज है। वर्तमान में पूज्य श्री तन सिंह जी द्वारा बनाई गई सामूहिक संस्कारमयी कार्यप्रणाली हमें क्षात्र धर्म का सहजता से पालन करने की प्रेरणा देती है ।

उक्त अवतरण लिखने के बाद यह जानना जरूरी व आवश्यक हो गया है कि संघ कार्य को करने में सहजता कैसे आये? पूज्य श्री तन सिंह जी ने संघ कार्य को ईश्वरीय कार्य बताया है। सबसे पहले हमें अपने बुद्धि और विवेक से यह समझ लेना जरूरी है कि संघ कार्य ही ईश्वरीय कार्य है। यह भाव प्रगाढ़ होने पर संघ के प्रति सच्ची आस्था और विश्वास हो जाता है जिससे आशा व निराशा के बंधन टूटने लगते हैं, हम स्वयं को कर्मों पर केंद्रित करने लगते हैं और कर्त्तापन का भाव नष्ट होने लगता है। कर्त्तापन का भाव न रहने पर हम अपने द्वारा किये गये कार्यों के परिणामों से भी चिंतित नहीं होंगे जिससे सहजता स्वतः आने लगती है। जब कर्त्तापन का भाव नहीं रहेगा, परिणामों की चिंता नहीं रहेगी तो हमारी मंशाओं में संदेह की गुंजाइश नहीं रहेगी तो छिपाने के लिए कुछ नहीं होगा और हमारे द्वारा किये गये कार्यों में पारदर्शिता आयेगी। हमारे आचरण, व्यवहार और संवादों में कृत्रिमता, आडम्बर आदि उपक्रमों को दूर रखकर स्वैच्छा से संघ कार्य करने पर सहजता आने लगती है ।

**भोमराज सिंह,** छापड़ा

(पृष्ठ एक का शेष)

**पद्मावती....**

उन्होंने कहा कि फिल्म के बहाने संस्कृति पर प्रहार करना कहां तक उचित है? फिल्मकार को चाहिए कि समाज के प्रतिष्ठित लोगों एवं इतिहासकारों को फिल्म दिखाये एवं उनके संतुष्ट होने पर ही इसे रिलीज करे। उन्होंने कहा कि मैं सरकारी संपति या सार्वजनिक संपति की तोड़फोड़ के पक्ष में नहीं हूँ लेकिन इस प्रकार की फिल्म का विरोधी तो हूँ ही। चित्तौड़ पहुंचने पर संघ प्रमुख श्री सर्वसमाज द्वारा चित्तोड़ किले के प्रवेश द्वार पाडनपोल पर चल रहे धरने में शामिल हुए और कहा कि राजघरानों में रानीयाँ दरबार में नृत्य नहीं करती जबकि फिल्म के प्रोमों में यह दिखाया गया है, इससे संकेत मिलता है कि फिल्म में और भी कुछ आपत्तिजनक हो सकता है और इस प्रकार का चित्रांकन करना देश की अस्मिता पर प्रश्नचिन्ह है।

**हाईकोर्ट...**

साथ ही यह भी समझना चाहिए कि वर्तमान में आरक्षण ऐसा जटिल विषय हो गया है कि हम केवल दबाव की राजनीति के बल पर इसे हल नहीं करवा सकते बल्कि हमें इसके लिए रणनीति बनाकर न्यायिक प्रक्रिया का सहारा लेना चाहिए। साथ ही दबाव की राजनीति के लिए मौन साधना द्वारा सरकारें बदलने का माद्धा विकसित करना चाहिए और इसके लिए अधिकतम लोगों का साथ मिले इसके लिए प्रयास करने चाहिए।

## राम कहां से लाओगे

राम मंदिर तो बन जाएगा पर राम कहाँ से लाओगे,
विघ्न कोहराम मचा है धरती पर ध्यान कहा से लाओगे।
रघुपति की मर्यादा थी तुलसी करते थे जिसका गान,
लाशों के पथ चलकर भी तुमको है कितना अभिमान।।
हृदय से कुंठित होकर बैठा एक अकेला मानव,
तुलसी नभ से देख रहा है रामधरा पर कैसे दानव।।
केवट ने हरि चरनन धोकर ऐसी एक प्रीत सिखाई,
रामलला ने गले लगाकर रामराज की राह दिखाई।।
जाति धर्म के बंधन छोड़ो मानव-मानव से प्रीत करो,
भाई सखा और बंधू मिलकर घर घर में मर्यादा की रीत करो।।
रिश्तों खातिर संपति छोड़े रामराज का धर्म वह,
संपति खातिर रिश्ते छोड़े कलियुग में कैसा धर्म यह।।
संन्यासी बन गए पर माया से मन हटा नहीं,
साधु वो कैसा जो भक्तिपथ पर डटा नहीं।।

**भागीरथ सिंह थूंबा**

## जगदंबेपालसिंह का देहावसान

जगदंबेपालसिंह ईनायती

मूलतः करौली जिले के ईनायती गांव के निवासी एवं वर्तमान में विजयनगर (गंगानगर) में निवासरत **जगदंबेपालसिंह ईनायती** का 30 अक्टूबर की रात्रि में सवाई मानसिंह चिकित्सालय जयपुर में उपचार के दौरान देहान्त हो गया। पूज्य तनसिंहजी के निकट संपर्क में रहे कैलाशपालसिंह ईनायती के पुत्र जगंदबेपालसिंह मा.प्रा.शि. स्थानण में नवंबर 1985 में संघ के संपर्क में आये। इन्होंने अपने जीवन काल में 6 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 7 मा.प्र.शि., 8 प्रा.प्र.शि एवं 2 विशेष शिविर किए।

## सुरुभा नारी को मातृशोक

गुजरात के भावनगर के निकट नारी शाखा के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुरुभा नारी की माताजी का 4 नवम्बर को देहांत हो गया। पथप्रेरक परिवार हुतात्मा की चिर शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

# सवाई जयसिंह की जयंती मनाई

जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह की 330 वीं जयंती 3 नवंबर को राजपूत सभा जयपुर द्वारा सभा भवन परिसर में मनाई गई। प्रातः 9 बजे से अपराह्न 2 बजे तक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया एवं तत्पश्चात जयंती मनाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व महाराज रघुवीरसिंह सिरोही ने सवाई जयसिंह को विलक्षण प्रतिभा का धनी बताते हुए उच्च कोटि के नगर नियोजक, कुशल राजनीतिज्ञ, न्याय प्रिय शासक, समाज सुधारक, ज्योतिषज्ञ व वैज्ञानिक सोच वाला शासक बताया। इनके अलावा महेन्द्रसिंह राघव (जिला न्यायाधीश), तेलंगाना के मुंशी रीवर कॉरपोरेशन के अध्यक्ष प्रेमसिंह राठौड़, मौसम वैज्ञानिक लक्ष्मणसिंह राठौड़, राजस्थान पत्रिका के सहायक संपादक प्रदीप शेखावत आदि वक्ताओं ने महाराजा सवाई जयसिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। सभाध्यक्ष गिरीराजसिंह लोटवाड़ा सहित कार्यकारिणी ने अतिथियों को स्वागत किया। इस अवसर पर सी.एस.भदौरिया, डॉ. जी.ए. झाला, घनश्यामसिंह राठौड़, श्रवणसिंह राठौड़ दासपां, सतवीरसिंह, हनुमानसिंह सोलंकी, कैप्टेन भंवरसिंह, दशरथसिंह शेखावत, मदनसिंह भदौरिया, अजयसिंह, प्रो. राजेन्द्रसिंह, गौरी कंवर शेखावत, रेणु कंवर, अभितेजसिंह, दिग्विजयसिंह, सदा कंवर राठौड़, सिद्धितासिंह सहित प्रशासन पत्रकारिता, चिकित्सा, समाज सेवा, खेल, शिक्षा आदि क्षेत्रों की 24 प्रतिभाओं का आईकोन के रूप में सम्मान किया गया।

# मनेगा मनु प्रतिष्ठा समारोह

चाणक्य गण समिति जयपुर द्वारा 10 दिसम्बर 2017 को दीप स्मृति सभागार, टैगोर इन्टरनेशनल स्कूल, मानसरोवर जयपुर में मनु प्रतिष्ठा समारोह मनाया जाएगा। इसमें महाराज मनु और मनु स्मृति के भेद को समझाया जाएगा। उनके नाम पर चलाये गए पाखण्ड एवं फैलाये गए भ्रम को लेकर चर्चा की जाएगी। मनुवाद नामक शब्द का उपयोग कर राजार्षि मनु की प्रतिष्ठा का विगत वर्षों में लगातार लांछित किया जा रहा है। शास्त्रों एवं संविधान के भेद को समझे बिना अनावश्यक टीका टिप्पणी की जाती है जबकि वास्तविकता यह है कि मनु से जायमान होने के कारण ही मनुष्य नाम का उद्बोधन अस्तित्व में आया है। इन्हीं सब बातों को स्पष्ट करने के लिए 10 दिसंबर को मनु प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

# राव ऊदाजी की जयंती मनाई

ऊदावत राठौड़ों को मूल पुरुष ऊदाजी की 55वीं जयंती 13 नवम्बर को जोधपुर में ऊदावत राठौड़ महासभा व ऊदावत युवा परिषद द्वारा मनाई गई। इस अवसर पर 250 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। समारोह में राव ऊदा जी पर आधारित डोक्युमेंट्री का भी प्रदर्शन किया गया। समारोह में पूर्व महाराजा गजसिंह, राज्य बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर, जेडीए चैयरमेन महेन्द्रसिंह राठौड़, पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, पूर्व सांसद गोपालसिंह ईड़वा, कांग्रेस नेता करणसिंह उचियारड़ा, हनुमानसिंह खांगटा, संत समताराम जी आदि अतिथियों ने राव ऊदा जी एवं समाज के विभिन्न विषयों पर अपनी बात रखी।

# भीनमाल में कर्मचारी प्रकोष्ठ की कार्यशाला संपन्न

संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ की जालोर जिले की एक दिवसीय कार्यशाला 5 नवंबर को भीनमाल स्थित भारती पब्लिक स्कूल में संपन्न हुई। सांघिक परंपरानुसार प्रारंभ हुई बैठक में कर्मचारी प्रकोष्ठ की भूमिका एवं परिचय के बारे में बताते हुए कहा गया कि संघ विकास एवं विस्तार का समन्वयात्मक शिक्षण है। यहां न तो एकांगी साधना कर व्यक्तिगत जीवन तक सीमित हुआ जाता है और न ही साधना विहीन जीवन की विकृतियों का विस्तार करने का मार्ग बताया जाता है बल्कि सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली द्वारा विकास एवं विस्तार का सुंदर समन्वय किया जाता है। संघ का कर्मचारी प्रकोष्ठ इसी अवधारणा को लेकर गठित किया गया है कि समाज की कर्मचारी शक्ति की उपलब्धियों का विस्तार किया जाए। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में जो प्राप्त किया है, जो उपलब्ध किया है उसे अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अभियान चलाया जा सके। इस हेतु कर्मचारी प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य समाज की कर्मचारी शक्ति का समाज के लिए उपयोग बढ़ाना है। साथ ही कर्मचारीयों को संघ से जोड़कर उनके जीवन को उच्चता की

ओर प्रवाहित करने का अवसर उपलब्ध करवाना व समाज के कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना भी इसके उद्देश्य हैं। प्रारंभिक परिचय एवं भूमिका के पश्चात जालोर जिले में इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किस तरह काम किया जा सकता है इस विषय पर चर्चा रखी गई। शैतानसिंह भूतेल, हनवंतसिंह गादेरी, खुमाणसिंह दूदिया, महेन्द्रसिंह कारोला, कालूसिंह रानीवाड़ा, मनोहरसिंह धवला, चंदनसिंह सांडन, उगमसिंह केशवना, गंगासिंह चारणीम, सुमेरसिंह मोरू, हितेन्द्रसिंह झाब आदि ने चर्चा के दौरान अपने अपने सुझाव साझा किए। चर्चा उपरांत रोजगार परामर्श, सरकारी योजनाओं के परामर्श, सरकारी कार्यालयों में समाज के लोगों के काम करवाने, समाज के कर्मचारियों के हितों के संरक्षण आदि विषयों पर जालोर जिले की कार्ययोजना बनाने के लिए अलग अलग दलों में बैठकर चर्चा की गई। तहसीलवार कार्यशालाएँ आयोजित कर ये जानकारी देने के लिए कार्यक्रम बनाये गए। तहसीलवार रोजगार परामर्श शिविरों के आयोजन का भी कार्यक्रम तय किया गया। आगामी महिनों में प्रत्येक माह एक तहसील में इस प्रकार के कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया गया। इस कार्यशाला में पूरे जिले से हर तहसील के कर्मचारी बंधु उपस्थित हुए। कार्यशाला में भोजन आदि की व्यवस्था भीनमाल शहर के कर्मचारी एवं अन्य बंधुओं ने मिलकर की। कुल 250 कर्मचारी इस कार्यशाला में उपस्थित रहे।

# पीपला भरतसिंह में प्रतिभा सम्मान

राजपूत सभा जयपुर की देहात इकाई द्वारा सांगानेर क्षेत्र के पीपला भरतसिंह में प्रतिभा सम्मान समारोह आयाजित किया गया जिसमें 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजपूत सभा अध्यक्ष गिरीराजसिंह लोटवाड़ा ने सामाजिक एवं राजनैतिक जागृति के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर दिया। गाजियाबाद स्थित दूदेश्वर मठ के महंत नारायण गिरीजी ने पिछड़े, गरीब, दुर्बल वर्ग की सेवा का आह्वान करते हुए इनके साथ खड़े रहने का आग्रह किया। महिलाओं को इंगित करते हुए उन्होंने कहा कि सावधानी पूर्वक संयमित जीवन अपनाना चाहिए। नांद (पुष्कर) के संत समताराम जी ने कुरीतियों से बचने एवं राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता जताई। देहात इकाई के अध्यक्ष रामसिंह चंदलाई ने सभा की गतिविधियों की जानकारी दी। दुर्गसिंह चौहान खींवसर ने सामाजिक कुरीतियों को रोकने की जरूरत बताई। संचालन मोतीसिंह सांवली ने किया।

## भारतीय सैनिकों के सम्मान में डाक टिकट जारी

इजराईल सरकार ने 23 सितंबर को भारतीय सैनिकों के सम्मान में डाक टिकट जारी किया है जिसमें जोधपुर का राजचिन्ह अंकित है। उल्लेखनीय है कि जोधपुर के सैनिकों ने विश्व युद्ध के समय इजराईल का हाईफा शहर मुक्त करवाया था।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org